बहुत बड़ी नाक

एक इतालवी कहानी

हार्वे ज़ीमाच, चित्र: मरगोट ज़ीमाच

बहुत बड़ी नाक

एक इतालवी कहानी

हार्वे ज़ीमाच, चित्र: मरगोट ज़ीमाच

बहुत पुरानी बात है. कहीं एक जगह एक गरीब, वृद्ध पिता रहता था. वह बहुत ही गरीब था और बहुत ही वृद्ध था. उसके तीन बेटे थे और एक दिन उसने तीनों को अपने पास बुलाया और कहा, “बेटो, अब समय आ गया है कि तुम घर से बाहर जाओ और दुनिया में कुछ बन कर दिखाओ. लेकिन इसके पहले कि तुम जाओ, मैं तुम तीनों को कुछ वस्तुयें देना चाहता हूँ, ऐसी वस्तुयें जो बहुत ही बहुमूल्य हैं.”

पिता की बात सुन कर तीनों लड़कों को बहुत आश्चर्य हुआ. “कौन सी वस्तुयें, पिताजी?” उन्होंने पूछा, “और वह कहाँ हैं?”

उनके पिता ने उन्हें लकड़ी के उस संदूक को बाहर निकालने के लिए कहा जो उसके बिस्तर के नीचे रखा हुआ था.

उन्होंने ने संदूक को खींच की बाहर निकाला और उसे खोला. संदूक के अंदर उन्हें क्या दिखाई दिया: एक पुरानी हैट जो ऊपर से दबी हुई थी और जिसके किनारे गायब थे, एक फटा-पुराना बटुआ जिसमें कई छेद थे और एक ज़ंग लगा भोंपू.

“देखो, मैंने क्या अनमोल वस्तु तुम्हें दी है!” पिता ने अपने बड़े बेटे से कहा.

बड़े बेटे ने हैट को उठा कर देखा और मायूसी से कहा, “पिता जी, यह हैट कभी अवश्य अच्छी रही होगी. लेकिन अब तो यह एक बिजूका के सिर पर रखने योग्य भी नहीं.”

“ऐसा तुम्हें लगता है,” पिता ने कहा, “लेकिन इसका चमत्कार यह है: इसे पहन कर तुम जहाँ भी जाना चाहते हो जा सकते हो और जो कुछ भी करना चाहते हो कर सकते हो. जब तक तुम इसे पहने रखोगे कोई भी तुम्हें देख न पायेगा.”

फिर उसने मँझले बेटे से कहा, “देखो, मैंने तुम्हें क्या दिया है!”

मँझले बेटे ने फटे-पुराने बटुए को झाड़ कर उस पर जमी धूल हटाई. “अगर इस में रखने के लिए मेरे पास एक सिक्का होता तो वह अवश्य ही गिर जाता, इसमें इतने सुराख हैं. लेकिन इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि मेरे पास एक सिक्का भी नहीं.”

"ऐसा तुम्हें लगता है," पिता ने कहा, "लेकिन इस बटुये का चमत्कार मैं तुम्हें बताता हूँ: जब भी तुम इस में अपनी उंगलियाँ डालोगे, तुम्हें इसके अंदर एक चांदी का सिक्का मिलेगा, और उसके बाद एक और, फिर एक और, जितने भी सिक्के तुम चाहो तुम्हें इसके अंदर मिलेंगे."

फिर उसने अपने तीसरे बेटे से कहा, "और देखो, मैंने तुम्हें क्या दिया है!"

"पिता जी, यह बहुत अच्छा भोंपू है," तीसरे बेटे ने कहा, "और जब कभी मुझे बहुत भूख लगी होगी तब मैं इसे बजा कर अपनी भूख भुलाने का प्रयास करूँगा."

"अनाड़ी लड़के! इसका यह उपयोग नहीं है," पिता ने कहा. "इसका चमत्कार यह है: जब भी तुम्हें कुछ चाहिए होगा, तुम्हें बस इसे बजाना होगा और कोई तुम्हारे सामने प्रकट होगा और जो कुछ तुम चाहोगे वह ले आयेगा, चाहे खाना हो या वस्त्र या महल या सेना."

फिर वृद्ध पिता ने अपने तीनों बेटों को आशीर्वाद दिया और वह घर से अलग-अलग रास्तों पर चल दिये. मँझले बेटे ने अपना बटुआ अपनी बेल्ट के नीचे दबा कर रख लिया और एक नगर की ओर चल दिया जो निकट ही था.

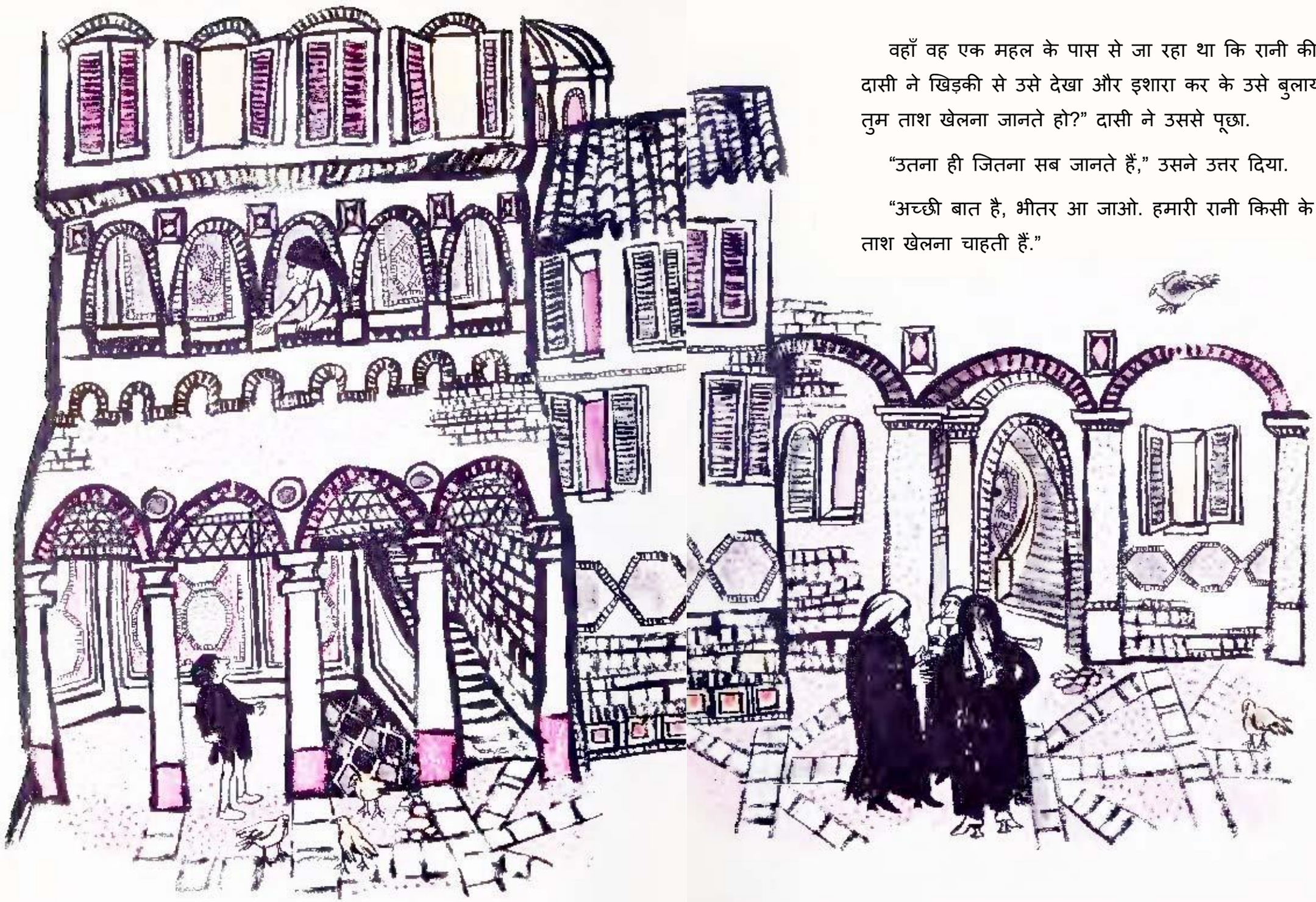

वहाँ वह एक महल के पास से जा रहा था कि रानी की एक दासी ने खिड़की से उसे देखा और इशारा कर के उसे बुलाया. “क्या तुम ताश खेलना जानते हो?” दासी ने उससे पूछा.

“उतना ही जितना सब जानते हैं,” उसने उत्तर दिया.

“अच्छी बात है, भीतर आ जाओ. हमारी रानी किसी के साथ ताश खेलना चाहती हैं.”

युवक महल के भीतर आया और सीढ़ियाँ चढ़ कर वहाँ आ गया जहाँ रानी एक मेज़ के पास बैठी थी. दासी ने उसे बताया कि उसे कहाँ बैठना है. रानी ने ध्यान से उसे देखा और ताश के पत्ते बाँटने लगी. वह एक घंटा खेले और रानी जीतती रही. हर बार जीतने के बाद रानी चिल्लाती, “रानी जीत गई! रानी चांदी के तीन सिक्के जीत गई!” और जब खेल खत्म हो गया तो रानी ने कहा, “ओ अभागे लड़के, तुम चांदी के तीस सिक्के हार गए हो. लेकिन चिंता न करो, मैं देख रही हूँ कि तुम इतने गरीब हो कि यह पैसे तुम नहीं दे सकते.”

“ओह, मैं यह पैसे दे सकता हूँ,” मँझले पुत्र ने कहा. उसने अपना बटुआ निकाला और तीस बार उसके अंदर हाथ डाला और हर बार चांदी का चमकता हुआ एक सिक्का उसमें से बाहर निकाला.

रानी हैरान हो गई. “यह कैसे संभव है,” आश्चर्यचकित रानी ने कहा, “कि इतना गरीब दिखने वाला लड़का एक फटे-पुराने बटुए में इतने सारे चांदी के सिक्के पा सकता है?”

“यह कोई साधारण बटुआ नहीं है,” लड़के ने बड़े अभिमान के साथ कहा, और रानी को अपने पिता के उपहार का रहस्य बता दिया.

"मुझे विश्वास नहीं होता. ज़रा मुझे यह बटुआ दिखाओ, मैं स्वयं देखना चाहती हूँ," रानी ने कहा और लड़के के हाथ से वह बटुआ छीन लिया. इसके पहले कि वह कुछ कह पाता रानी ने अपने पहरेदारों को बुलाया और उन्हें आदेश दिया कि लड़के को महल से बाहर खदेड़ दें और उसकी खूब पिटाई भी करें.

जब पहरेदारों ने उसे छोड़ दिया तो वह अपने बड़े भाई को ढूँढने निकल पड़ा. जब उसे अपना भाई मिला तो उसने उसे रानी के विषय में बताया और उससे उसकी हैट मांगी. उसने वादा किया कि वह हैट शीघ्र ही लौटा देगा.

जैसे ही उसे हैट मिली, उसने उसे सिर पर पहन लिया और अदृश्य हो गया. फिर वह रानी के महल लौट आया. रात्रि-भोज का समय था. हैट पहनने के कारण वह अदृश्य हो गया था इसलिए किसी ने उसे भीतर आकर खाने की मेज़ पर रानी के साथ बैठते नहीं देखा. उसने तब तक प्रतीक्षा की जब तक कि रानी को सूप नहीं परोसा गया. रानी के सूप पीने से पहले ही उसने सूप का कटोरा उठा लिया, सारा सूप पी कर उसने खाली कटोरा मेज़ पर रख दिया. रानी बहुत हैरान हुई. उसे और भी हैरानी हुई जब उसके लिए परोसा सारा खाना इसी तरह गायब हो गया. अंततः रानी ने चिल्लाकर कहा, "तुम कौन हो, अदृश्य मानव, और तुम क्या चाहते हो?"

"मैं वही हूँ जिसके साथ आपने ताश खेली थी," युवक ने कहा, "और मैं आपको शांति से न रहने दूँगा जब तक कि आप मेरा बटुआ नहीं लौटा देतीं."

"मैं प्रसन्नता से लौटा दूँगी," रानी ने कहा, "लेकिन मैं कैसे विश्वास कर लूँ कि यह तुम ही हो, कोई और व्यक्ति नहीं? पहले तुम मुझे तुम्हें देखने दो फिर मैं तुम्हारा बटुआ लौटा दूँगी."

मँझले बेटे ने अपने सिर से हैट उठा ली और वह दिखाई देने लगा. उसने रानी से कहा, “अब आप मुझे देख पा रही हैं. यह मैं ही हूँ और मेरा बटुआ मुझे लौटा दें.”

रानी गई और एक मेज़ के दराज से फटा-पुराना बटुआ ले कर आई, बटुआ उसे देने से पहले रानी ने उससे पूछा, “युवक, मुझे ज़रा बताओ, यह जादू तुम ने कैसे किया? तुम अदृश्य कैसे हो गये थे?”

“ओह,” उसने कहा, “यह तो इस फटीचर हैट का चमत्कार है. जैसे ही कोई इसे पहनता है वह अदृश्य हो जाता है.”

“मुझे विश्वास नहीं हो रहा,” रानी ने कहा.

“लेकिन यह सच है,” उसने कहा, “आप इसे एक बार पहने और.....”

“असंभव!” रानी ने कहा, “ज़रा मुझे देखने दो.” और रानी ने झपट कर उससे हैट छीन ली और अपने सिर पर पहन ली.

“देखो, जैसा मैंने कहा था,” लड़के ने कहा, “अब आप अदृश्य हैं.”

“हाँ, मैं अदृश्य हूँ,” रानी चिल्लाई और तेज़ी से कमरे से बाहर आ गई.

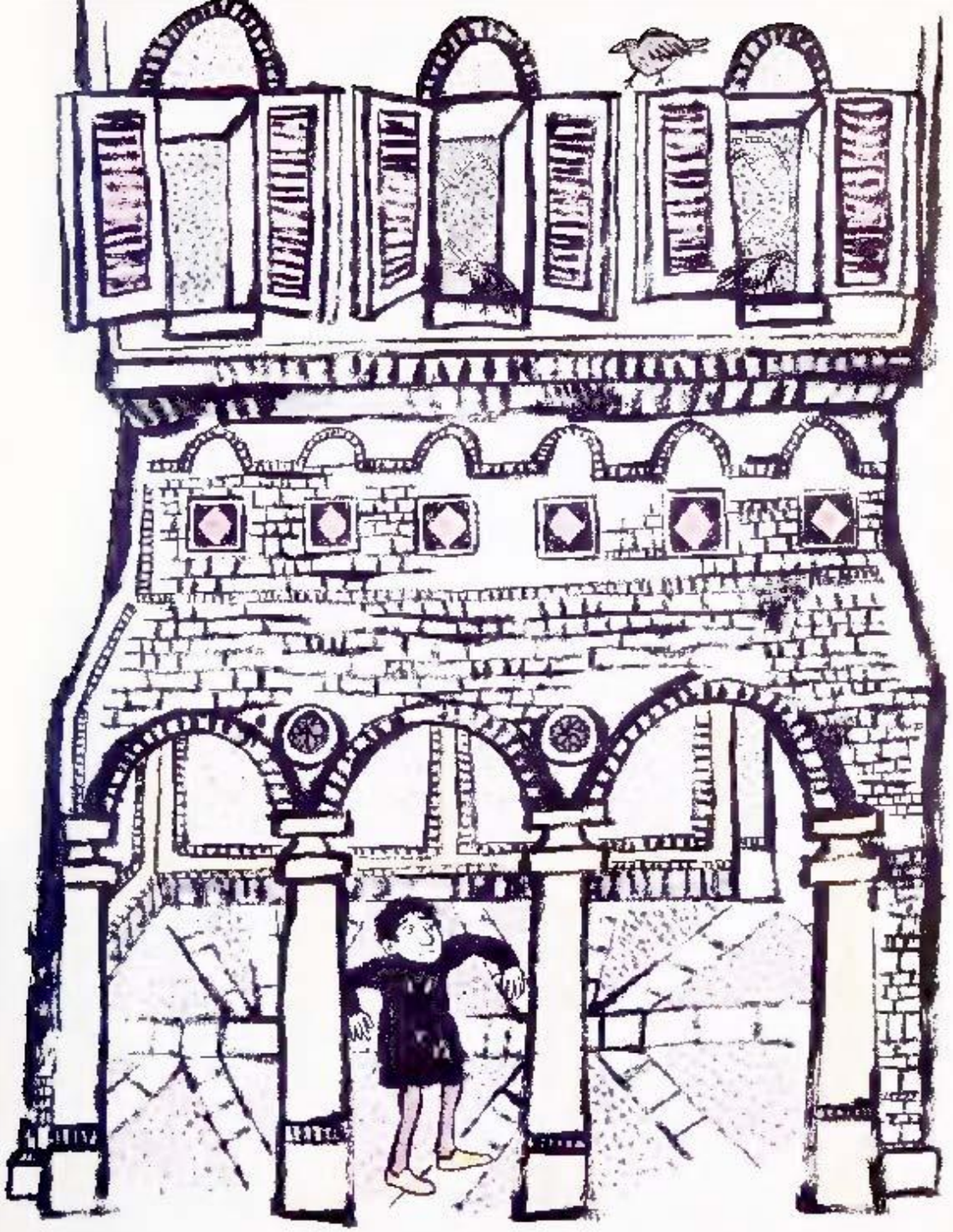

इसके पहले कि लड़का कुछ समझ पाता, रानी ने अपने पहरेदारों को बुलाया और उन्हें आदेश दिया कि उसे महल से बाहर फेंक दें. पहरेदारों ने उसे बाहर फेंक दिया.

युवक उठा और लड़खड़ाता हुआ अपने छोटे भाई को ढूँढने चल पड़ा. जब उसे छोटा भाई मिला तो उसने उससे उसका ज़ंग लगा भोंपू मांगा, सिर्फ थोड़े समय के लिए. उसका भाई नाराज़गी में भुनभुनाने लगा लेकिन आखिरकार उसने अपना भोंपू उसे दे दिया. मँझला बेटा जल्दी-जल्दी महल की ओर चल दिया.

महल के पास पहुँच कर उसने गहरी साँस ली और जितना ऊँचा वह भोंपू बजा सकता था उतना ऊँचा उसने भोंपू बजाया. तुरंत उसके सामने कोई प्रकट हुआ और रहस्यमय आवाज़ में उससे पूछा, “आप क्या चाहते हैं?”

“इस महल को ध्वस्त करने के लिए मुझे तोपों के साथ एक सेना चाहिए,” युवक ने चिल्ला कर कहा. और उसी पल सैनिकों के मार्च करने की और तोप-गाड़ियों के चलने की आवाज़ें सुनाई देने लगीं.

उसके सैनिकों ने महल को चारों ओर से घेर लिया और तोपों को महल की ओर मोड़ दिया. रानी और उसके दास-दासियाँ भयभीत हो गए.

“यह सब क्या है?” जैसे ही रानी ने मँझले बेटे को खिड़की के नीचे खड़े देखा, वह चिल्लाई.

“मुझे मेरा बटुआ और हैट लौटा दो,” लड़के ने कहा, “अन्यथा मैं इस महल को गिरा दूँगा!”

“रुको,” रानी ने कहा, “वह वस्तुयें यहाँ मेरे पास ही हैं. तुम भीतर आ जाओ और मैं अभी वह तुम्हें दे दूँगी”

रानी की बात सुन युवक दोनों वस्तुयें लेने के लिए महल के अंदर आ गया. रानी कमरे में यहाँ-वहाँ भागने लगी, वह अलमारियाँ खोलने और बंद करने लगी, कुर्सियों के नीचे ढूँढने लगी. “तुमने मुझे इतना भयभीत कर दिया है,” रानी ने कहा, “कि मुझे याद ही नहीं आ रहा कि मैंने उन्हें कहाँ रख दिया है. क्या वह उस बेंच के पीछे हैं? नहीं? क्या कोने में रखे मेज़ के नीचे हैं?”

“युवक भी उन वस्तुओं को ढूँढने लगा और जब वह ढूँढ रहा था, रानी ने कहा, “तुम जैसे गरीब व्यक्ति ने किस प्रकार एक सेना इकट्ठी कर ली?”

“क्योंकि मेरे पास यह भोंपू है,” उसने कहा, “और अगर तुरंत आपने मेरी वस्तुयें नहीं ढूँढीं तो मैं अपने सैनिकों को आदेश दूँगा कि अभी इस महल को ध्वस्त कर दें.”

“वह ज़ंग लगा भोंपू?” रानी बोली, “मुझे विश्वास नहीं हो रहा. अरे, मुझे तो लगता है कि इसमें से तो आवाज़ भी न निकलती होगी.”

“यह कर सकता है,” उसने कहा, “आप इसे इस तरह पकड़ें और इसमें ज़ोर से फूँक मारें.”

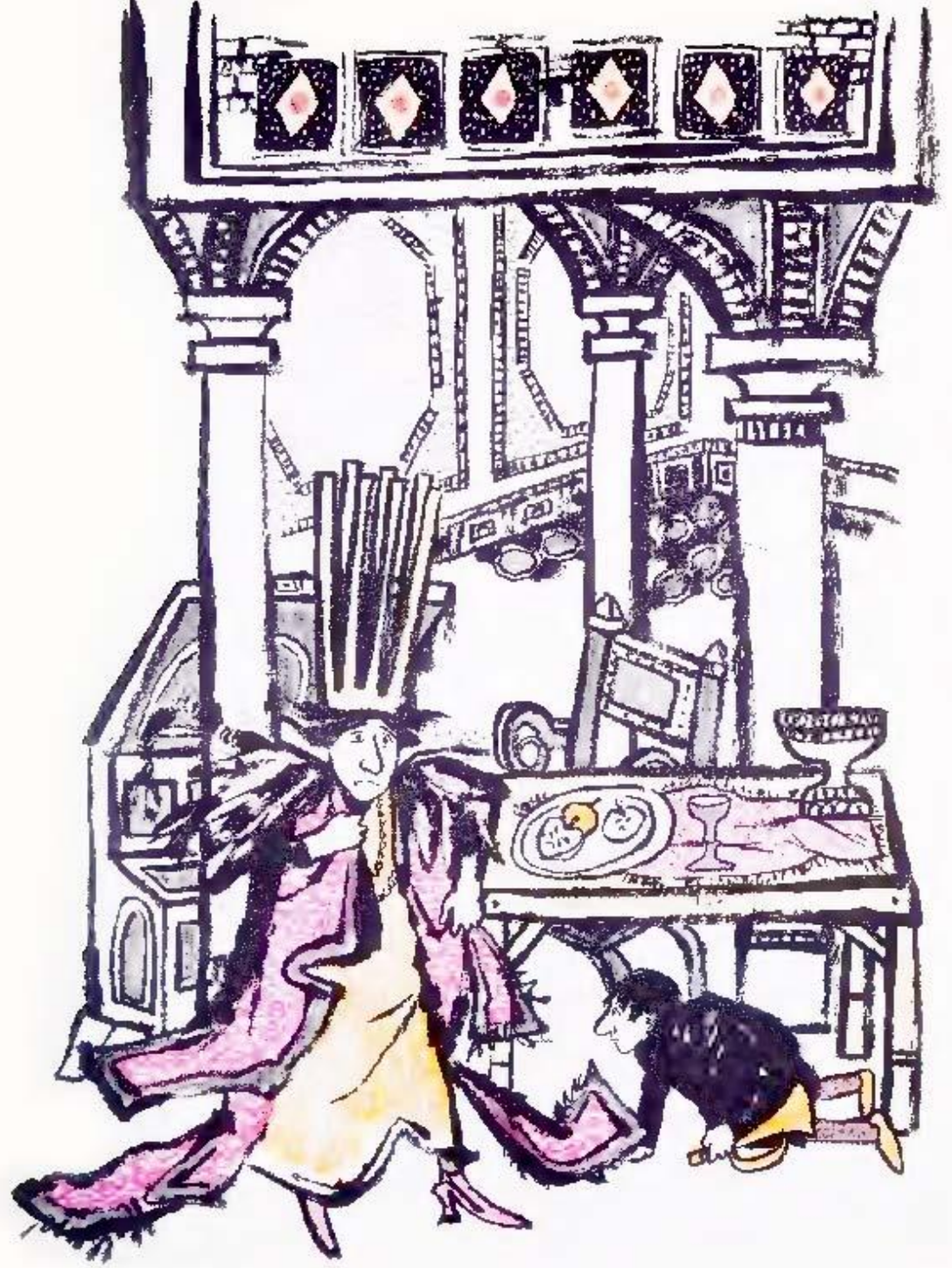

"सच में?" रानी ने कहा, "मुझे प्रयास करने दो!" इतना कह कर रानी ने उससे भोंपू छीन लिया और उसे बजाने लगी. उसी पल कोई उसके सामने प्रकट हुआ और बोला, "आपकी क्या इच्छा है?"

"मुझे दो हट्टे-कट्टे आदमी चाहिए," रानी ने चिल्लाकर कहा, "और मैं चाहती हूँ कि वह दोनों इस फटेहाल युवक को धक्के मार कर मेरे महल से बाहर निकाल दें और इसकी खूब पिटाई करें."

और वैसा ही हुआ. और अब मँझले बेटे के पास कुछ भी न था. अपने भाइयों के पास जाने में उसे शर्म आ रही थी. इसलिए भटकता हुआ वह नगर के बाहर चला गया.

वह यहाँ-वहाँ भटकता रहा. सूर्य अस्त हो गया और उसे रास्ता भी दिखाई न दे रहा था. वह फलों के एक बगीचे में आ पहुँचा. अंजीर के एक पेड़ के नीचे वह सिमट कर बैठ गया.

अगली सुबह वह बहुत जल्दी उठ बैठा. यद्यपि अंजीर का मौसम नहीं था, उसने आश्चर्य से देखा कि पेड़ स्वादिष्ट अंजीर के फलों से भरा हुआ था. भाग्य ने कुछ तो साथ दिया, उसने सोचा, क्योंकि इतना भटकने के कारण उसे बहुत भूख लग गई थी. उसने कुछ अंजीर तोड़े और खाने लगा. अंजीर इतने स्वादिष्ट थे कि उसने ध्यान ही नहीं दिया कि उसकी नाक में सुरसुराहट सी हो रही थी. लेकिन अचानक उसने फलों का गुच्छा नीचे फेंक दिया और उछल कर खड़ा हो गया.

उसकी नाक भयंकर रुप से बड़ी हो गई थी!

बेचारा! अब वह लोगों के सामने भी न जा सकता था. अब शेष जीवन उसे नगर के बाहर भटकते हुए ही बिताना पड़ेगा. वह उस बगीचे से बाहर आ गया और तेज़ी से रास्ते पर चलने लगा. शीघ्र ही उसे चैरी के कुछ पेड़ दिखाई दिये.

एक पेड़ पर पके हुए चैरी लगे थे. वह अभी भी भूखा था. उसने चैरी के कुछ फल तोड़े और खाने लगा. हर चैरी खाने के साथ उसकी नाक एक इंच छोटी हो गई. जब तक उसने सारे चैरी खाये, उसकी नाक सामान्य रुप की हो गई थी.

“अहा!” उसने ऊँची आवाज़ में कहा, “अब मैं जानता हूँ कि मुझे क्या करना है!”

उसने पके हुए चैरी के फलों का जूस एक बोतल में भर लिया. फिर भाग कर उस बगीचे में आया जहाँ अंजीर लगे थे. उसने एक टोकरी में बहुत सारे अंजीर तोड़ कर रख लिए. फिर वह रानी के महल आ गया. महल के पिछले दरवाज़े के पास आकर उसने चिल्लाकर कहा, “अंजीर ले लो, पके हुए स्वादिष्ट अंजीर ले लो!”

रानी की दासियों ने सारे अंजीर उससे खरीद लिए. उन्होंने रानी के पास संदेश भिजवाया कि वर्ष के इस समय में भी सौभाग्य से उन्हें पके हुए स्वादिष्ट अंजीर खरीदने के लिए मिल गए थे. रानी ने कहा कि अंजीर तुरंत उसे परोसे जायें. महल में उपस्थित सब लोगों ने मज़े से अंजीर खाये, और रानी ने तो सबसे अधिक अंजीर खाये.

और अंजीर खाने के बाद जैसा मँझले बेटे के साथ हुआ था, ठीक वैसा ही महल में उपस्थित हर व्यक्ति के साथ हुआ. हर एक की नाक बढ़ती गई, बढ़ती गई. महल में भयंकर हाहाकार मच गया. उन लोगों ने डाक्टरों को बुलाया और मीलों दूर से डाक्टर दौड़े आए. उन सब ने, एक के बाद एक, कई दवाइयों का उपयोग किया परंतु किसी दवाई से लाभ न हुआ. इस बीच मँझला बेटा एक खिड़की के नीचे छिपकर प्रतीक्षा करता रहा. उसने तबतक प्रतीक्षा की जब तक सब डाक्टरों ने विफल होकर हार नहीं मान ली और महल से लौट नहीं गए. फिर उसने चेहरे पर दाढ़ी लगा ली और सिर पर एक हैट पहन ली और हैट को आँखों तक नीचे कर लिया. फिर वह चिल्लाया, "नाक! मैं नाक का इलाज कर सकता हूँ! जिस की भी नाक बड़ी हो गई है वह मेरे पास आ जाए!"

रानी और उसके दास-दासियाँ झटपट खिड़की की ओर आए. “एक विदेशी डाक्टर!” रानी चिल्लाई, “शायद वह हमारी सहायता कर पाए.” उन्होंने उसे भीतर बुलाया और उन सब की नाक का इलाज करने के लिए उससे निवेदन किया.

“ठीक है,” उसने कहा, “मेरे पास एक असाधारण दवाई है, ऐसे ही रोग का इलाज करने के लिए. लेकिन यह बहुत शक्तिशाली दवाई है. आम लोगों को इससे हानि न हो लेकिन शायद रानी को हानि हो सकती है.”

“बेकार की बात,” रानी ने कहा, “अगर तुम्हारी दवा से सच में नाक का इलाज किया जा सकता है तो मुझे भी यह दवा चाहिए. तुम्हें जो भी मूल्य चाहिए मैं दूँगी.”

“हाँ, आपको मूल्य देना होगा, बहुत अधिक मूल्य, क्योंकि संसार में इस जैसी कोई और दवा नहीं है. लेकिन मुझे लगता है कि एक रानी को देने के लिए यह बहुत अधिक शक्तिशाली है.”

“तो ठीक है, पहले तुम दास-दासियों का इलाज करो,” रानी ने कहा. रानी ने सोचा कि कोई मूल्य चुकाने से पहले उसे देखना चाहिए कि दवा का कोई प्रभाव है भी या नहीं.

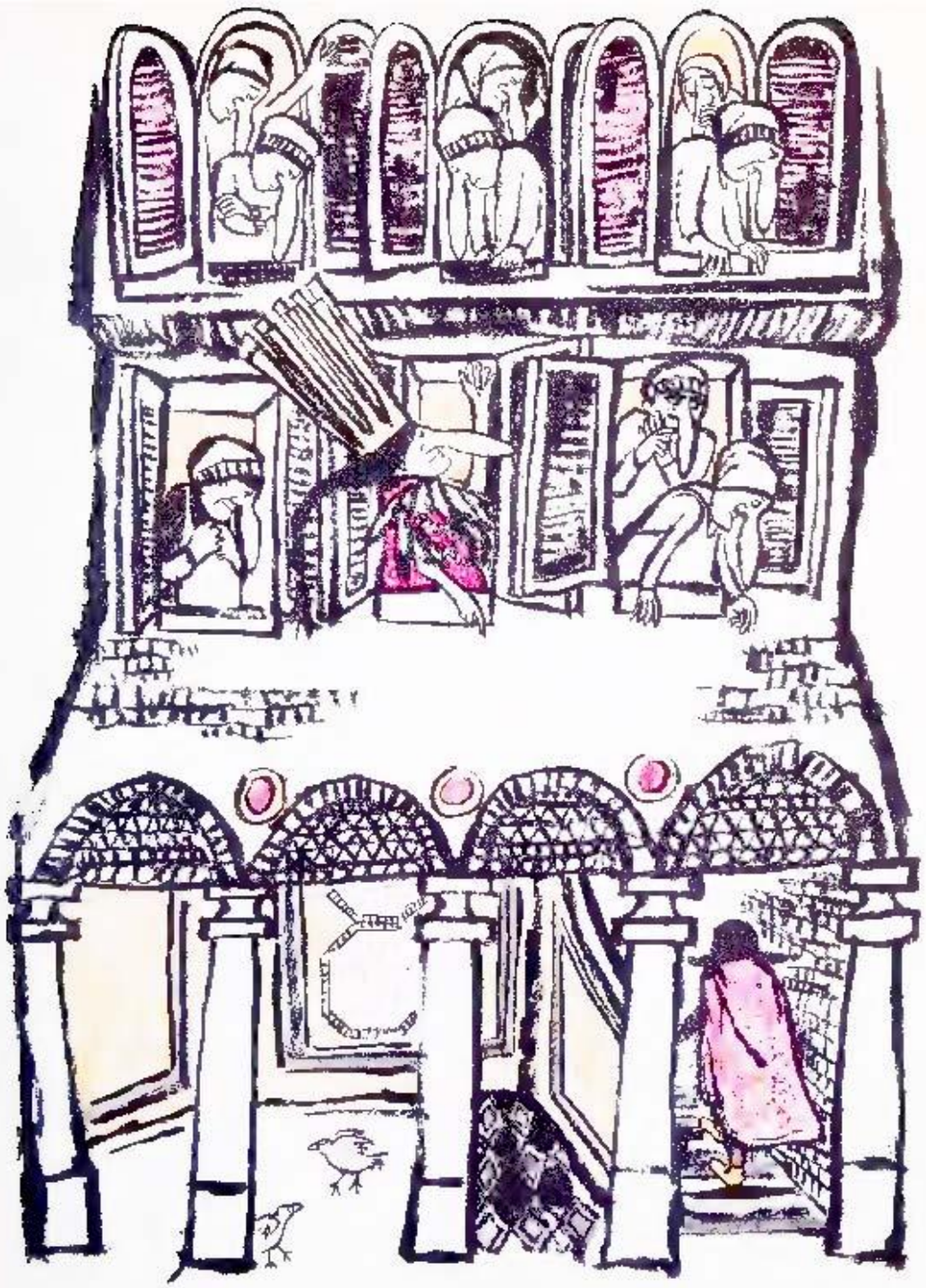

मँझले बेटे ने चैरी जूस से भरी बोतल उठाई और रानी के हर दास-दासी को उतना जूस पीने के लिए दिया जितने जूस से उसकी नाक साधारण आकार की न हो गई.

"देखो! मैंने क्या कहा था?" उसने कहा, "क्या यह चमत्कारी दवा नहीं है? एक बूंद...दो बूंद...और देखो! नाक का इलाज हो गया."

रानी ने आश्चर्य से देखा. उसने देखा कि किस प्रकार दवा ने काम किया था. लेकिन एक विदेशी डाक्टर की डींग सुनकर उसे बहुत ईर्षा हुई. "तुम्हें लगता है कि तुम बहुत चतुर हो," रानी ने कहा, "लेकिन अकेले तुम ही नहीं हो जो चमत्कार कर सकता है. तुम्हारे चमत्कार से भी बड़े चमत्कार मेरे पास हैं."

"क्या ऐसा संभव है?" नकली डाक्टर ने कहा.
"मेरी इस दवा से बड़ा चमत्कार क्या हो सकता है?"

“क्यों, मेरे पास एक हैट है,” रानी ने कहा, “जिसे सिर पर पहन कर व्यक्ति अदृश्य हो जाता है, एक बटुआ है जिस के अंदर, जब भी हाथ डालो, एक चांदी का सिक्का मिलता है और एक भोंपू है जिसे बजाने पर कोई प्रकट होता है जो भोंपू बजाने वाले की हर इच्छा पूरी कर देता है.”

“आप मज़ाक कर रही हैं,” युवक ने कहा, “ऐसी वस्तुयें नहीं होतीं.”

“हाँ, होती हैं. और वह मेरे पास हैं,” इतना कह कर रानी ने युवक को हैट और बटुआ और भोंपू दिखाये.

पलक झपकने से पहले ही मँझले बेटे ने हैट अपने सिर पर पहन लिया. फिर रानी के हाथ से बटुआ और भोंपू छीन लिया और महल से गायब हो गया. फिर उसने अपने भाइयों को ढूँढा और हैट और भोंपू उन्हें लौटा दिये. अपने जादुई बटुए की सहायता से उसने जीवन के शेष दिन बड़े आराम से बिताये.

और रही रानी की बात, तो तुम अनुमान लगा सकते हो वह कितनी क्रोधित हुई होगी. लेकिन यह कहना कठिन है कि उसे किस बात पर अधिक गुस्सा आता था-जो चमत्कारी वस्तुयें उसने मँझले बेटे से हड़पी थीं, उनके खोने पर या फिर अपनी बहुत बड़ी नाक पर.